इकाई 5 अशोक का प्रथम गिरनार शिलालेख

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 अशोक का जीवनवृत्त

5.3 अशोक के अभिलेखों का विभाजन एवं उनकी विषयवस्तु

5.4 अशोक का साम्राज्य विस्तार

5.5. प्रथम गिरनार शिलालेख का परिचय

5.5 गिरनार का उत्कीर्ण लघु स्तम्भलेख

5.6 सारांश

5.7 शब्दावली

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- अशोक के जीवनवृत्त को जान पायेंगे।
- अशोक के अभिलेखों का विभाजन एवं उनकी विषयवस्तु के बारे में जान सकेंगे।
- प्रथम गिरनार शिलालेख के बारें में जान सकेंगे।
- प्रथम गिरनार का उत्कीर्ण लघु स्तम्भलेख को ज्ञात कर सकेंगे।
- प्रयुक्त तकनीकि शब्दावली के बारे में जान सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

मौर्यवंश के शासकों में ही नहीं, बल्कि प्राचीन विश्व के महानतम शासकों में अशोक की गणना होती है। अनेक विद्वानों ने उसकी तुलना डेविड और सोलमन, मार्कस ऑरिलियस और शार्लमां जैसे महान शासकों से की है। संभवतः विश्व का वह प्रथम सम्राट था, जिसने साम्राज्यवादी युग में युद्ध की नीति का त्याग किया और प्रजा को अपनी संतान के समान समझा। धार्मिक और प्रशासनिक मामलों में भी उसकी गहरी अभिरुचि थी। उसका नाम मास्की शिलालेख में मिलता है। रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में भी अशोक के नाम का उल्लेख हुआ है। इस इकाई–5 में अशोक के जीवनवृत्त, उसके अभिलेखों का विभाजन एवं उनकी विषयवस्तु, प्रथम गिरनार शिलालेख एवं गिरनार के उत्कीर्ण लघु स्तम्भलेख को ज्ञात कर सकेगें।

5.2 अशोक का जीवनवृत्त

अशोक के प्रारम्भिक जीवन से संबद्ध अनेक किवंदतियों का उल्लेख बौद्ध ग्रन्थों में मिलता है। बिन्दुसार के अनेक पुत्र थे। अशोक यद्यपि सबसे ज्येष्ठ नहीं था, तथापि

वही गद्दी पर बैठा। कहा जाता है कि अशोक की माता का नाम सुभद्रांगणी या धम्मा था, जो चंपा के एक ब्राह्मण की पुत्री थी। दिव्यावदान और अशोक के अभिलेखों से (पंचम शिलालेख) स्पष्ट हो जाता है कि अशोक के अनेक भाई–बहन थे। यद्यपि अशोक बचपन में बहुत ही उग्र एवं उद्दंड प्रवृत्ति के थे, देखने में भी कुरुप था, तथापि वह कुशाग्रबुद्धि था। उसकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था हुई। उसमें प्रशासनिक गुण भरे हुए थे, अतः बिंदुसार को पराजित करने के लिए अशोक को ही भेजा गया। इस कार्य में वह सफल रहा। अशोक ने खस और नेपाल की भी विजय राजा बनने के पूर्व ही की। उज्जैन में ही उसने एक धनी व्यापारी की पुत्री देवी से विवाह किया जिससे महेन्द्र और संघमित्रा पैदा हुए।

बौद्धग्रन्थों (दिव्यावदान, महावंश, दीपवंश, महाबोधिवंश) से ऐसा आभास मिलता है कि बिन्दुसार की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष हुआ। मंत्री राधागुप्त की सहायता से इस संघर्ष में अशोक विजयी रहा। लेकिन बिन्दुसार की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्रों में उत्तराधिकार का संघर्ष हुआ, जिससे अंततः अशोक विजयी हुआ। वह 269 ई. पू. में गद्दी पर बैठा।

अशोक के 37 वर्षों के शासनकाल को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है–

- अभिषेक के पश्चात प्रथम से सातवें वर्ष तक का राज्यकाल
- आठवें से सत्ताइसवें वर्ष का शासन
- अट्ठाइसवें से सैतीसवें वर्ष तक का समय।

अशोक के शासन का प्रथम काल एक सामान्य चक्रवर्ती राजा के आदर्शों की तरह व्यतीत हुआ। इस अवधि के दौरान वह **'चण्डाशोक'** के रूप में विख्यात था। कहा जाता है कि एक बार जब उसके अंतःपुर की स्त्रियों ने उसकी कुरुपता का मजाक उड़ाया, तब क्रुद्ध होकर उसने अन्तःपुर की 500 स्त्रियों की हत्या करवा दी। चीनी यात्री फाहियान भी उसकी क्रूरता का वर्णन करता है। फाहियान के अनुसार अशोक ने राजधानी पाटलिपुत्र में एक नरक की स्थापना की थी, जहाँ लोगों को सताने एवं दंडित करने के नए–नए तरीके वह खोजता था और लोगों को कष्ट सहते हुए देखकर आनंदित होता था। फाहियान के बाद आने वाला चीनी यात्री ह्वेनसांग भी इसकी पुष्टि करता है। वह तो यहाँ तक कहता है कि उसने स्वयं अपनी आँखों से नरक की दीवारों को देखा था। परन्तु बौद्धधर्म ने उसका हृदय परिवर्तन कर दिया और वह एक धर्मावलंबी शासक बन गया। अशोक के राज्यकाल का सबसे महत्वपूर्ण भाग दूसरा चरण था। इसी अवधि में कलिंग का विख्यात युद्ध हुआ, जिसने अशोक के जीवन दर्शन को बदल दिया। अशोक के राज्यकाल के तीसरे भाग की घटनाओं की स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती।

5.3 अशोक के अभिलेखों का विभाजन एवं उनकी विषयवस्तु

मौर्य सम्राट अशोक के इतिहास की संपूर्ण जानकारी उसके अभिलेखों से मिलती है। मौर्य राजवंश के सम्राट अशोक द्वारा प्रवर्तित कुल 33 अभिलेख प्राप्त हुए हैं, जिन्हें अशोक ने स्तम्भों, चट्टानों और गुफाओं की दीवारों में अपने 269 ईसापूर्व से 231 ईसापूर्व चलने वाले शासनकाल में खुदवाए। ये आधुनिक बंगलादेश, भारत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और नेपाल में जगह–जगह पर मिलते हैं और बौद्ध धर्म के

अस्तित्व के सबसे प्राचीन प्रमाणों में से है। अशोक को अभिलेखों की प्रेरणा ईरान के शासक 'डेरियस' से मिली थी। अशोक के लगभग 40 अभिलेख प्राप्त हुए हैं। सम्राट् अशोक के ब्राह्मी लिपि में लिखित संदेश को सर्वप्रथम एलेग्जेंडर कनिंघम के सहकर्मी जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था। अशोक के अभिलेखों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–1. शिलालेख 2. स्तम्भलेख 3. गुहालेख। शिलालेखों और स्तम्भ लेखों को दो उपश्रेणियों में रखा जाता है।

1. शिलालेख

14 शिलालेख सिलसिलेवार हैं, जिनको **'चतुर्दश शिलालेख'** कहा जाता है। ये शिलालेख शाहबाजगढ़ी, मानसेरा, कालसी, गिरनार, सोपारा धौली और जौगढ़ में मिले हैं। कुछ शिलालेख असंबद्ध एवं संक्षिप्त रूप में हैं, इसीलिए उन्हें 'लघु शिलालेख' कहा जाता है। ये लघु शिलालेख रूपनाथ, सासाराम, बेराट, मास्की, सिद्धपुर, जतिंगरामेश्वर और ब्रह्मगिरि में पाए गए हैं। दूसरी श्रेणी के लघु शिलालेख बैराट और कोपलबाल में मिले हैं। दो अन्य लघु शिलालेख बैराट येरागुड़ी और कोपलबाल में मिले हैं। दो अन्य लघु शिलालेख अभी हाल में ही अफगानिस्तान में एक जलालाबाद में और दूसरा कंधार के निकट मिला है।

2. स्तम्भलेख

स्तंम्भो पर उत्कीर्ण सात लेख हैं, जिसके कारण वह स्तम्भ लेख के नाम से प्रसिद्ध है। ये स्तम्भ लेख दिल्ली, इलाहाबाद, लौरिया–अरराज, लौरिया नन्दनगढ़ और रामपुरवा में मिले हैं। कुछ स्तम्भों पर केवल एक–एक लेख है। वे लघुस्तम्भ लेख कहे जाते हैं, वे सारनाथ, सांही, रुम्मिनदेई और निग्लीव में मिले हैं।

3. गुहालेख

अंतिम तीन लेख समान रूप से पहाड़ियों की गुफाओं में मिले हैं और उनको गुफालेखों के नाम से पुकारा जाता है। इन शिलालेखों के अनुसार, अशोक के बौद्ध धर्म फैलाने के प्रयास भू–मध्य सागर के क्षेत्र तक सक्रिय थे और सम्राट मिस्र और यूनान तक की राजनीतिक परिस्थितियों से भलीभाँति परिचित थे। इनमें बौद्ध धर्म की बारीकियों पर जोर कम और मनुष्यों को आदर्श जीवन जीने की सीखें अधिक मिलतीं हैं। पूर्वी क्षेत्रों में यह आदेश प्राचीन मागधी भाषा में ब्राह्मी लिपि के प्रयोग से लिखे गए थे। पश्चिमी क्षेत्रों के शिलालेखों में भाषा संस्कृत से मिलती–जुलती है और खरोष्ठी लिपि का प्रयोग किया गया। एक शिलालेख में यूनानी भाषा प्रयोग की गई है, जबकि एक अन्य में यूनानी और अरामाई भाषा में द्विभाषीय आदेश दर्ज हैं। इन शिलालेखों में सम्राट अपने आपको 'प्रियदर्शी' (प्राकृत में पियदस्सी) और देवानाम्प्रिय (यानी देवों को प्रिय प्राकृत में देवानम्पिय) की उपाधि से बुलाते हैं।

5.4 अशोक का साम्राज्य विस्तार

अशोक के समय में साम्राज्य विस्तार की प्रथम साक्ष्य उसकी कला कृतियाँ (स्तम्भ, स्तूप आदि) हैं जो अशोक के साम्राज्य में रहीं होगी। दूसरा साक्ष्य है अशोक के अभिलेख–शिलालेख और स्तम्भलेख जिन पर अशोक ने आज्ञाएँ अंकित कराकर जगह–जगह स्थापित कराईं। शिलालेख जहाँ उसके साम्राज्य की सीमा पर स्थित हैं वहीं स्तम्भलेख उसके राज्य के भीतर के प्रदेशों में हैं। इनमें प्रदेशों व जातियों का भी

उल्लेख जो अशोक के साम्राज्य सीमा रेखा के भीतर थे (अपरान्त), जो सीमा रेखा के बाहर थे (अन्त राज्य) और जो इनकी दूसरी पंक्ति में थे (प्रत्यन्त राज्य) जहाँ दौत्य संबंध स्थापित था। विदेशी यात्री यद्यपि अशोक के समय भारत नहीं आए थे पर जो बाद में आए उनके विवरणों में अशोक की कला के प्रतीकों के प्राप्तिस्थान के उल्लेख से हमें इस दिशा में सहायता मिलती है। इस प्रकार मुख्यतः पुरातात्विक स्रोतों के आधार पर ही अशोक का साम्राज्य विस्तार निश्चित किया जा सकता है। इसके साथ ही सहायक हैं साहित्यिक स्रोत के रूप में कल्हण की राजतरंगिणी तथा सिंहली गाथाएँ। इन साक्ष्यों का अलग–अलग अध्ययन न करके समन्वित क्रम से साम्राज्य विस्तार का अध्ययन करें तो समन्वित व्यवस्थित विवरण प्राप्त कर सकते हैं।

उत्तर–पश्चिमी सीमा पर अशोक द्वारा अधिकृत साम्राज्य सीमा पहले यूनानियों के अधिकार में थी जिनके नायक सेल्यूकस से संधि करके चन्द्रगुप्त ने गेड्रोसिया (बलूचिस्तान), आरकोसिया (कन्दहार), पेरापनिसदाई (काबुल) और एरिया (हिरात) को प्राप्त कर अपने साम्राज्य में सम्मिलित किया था जिन्हें अशोक ने खोया नहीं था। काबुल नदी के उत्तर लमगाना (अफगानिस्तान) से अरामइक लिपि में तथा कांधार से यूनानी और अरामइक लिपि में इसके अभिलेख मिले हैं। 13वें शिलालेख में यवन (अफगानिस्तान) तथा कम्बोज (कश्मीर और काफरिस्तान) जातियों का उल्लेख उसके साम्राज्य के भीतर हुआ है। अन्तियोक (अण्टिओकस द्वितीय) को यवन और पड़ोसी राजा कहा गया है तथा उससे 800 योजन की दूरी पर स्थित तलमुये, अन्तकिन, मक और अलिकसुन्दर राजा भी उसके सीमाप्रदेश पर स्थित बताए गए हैं। इस प्रकार अशोक के साम्राज्य की पश्चिमी सीमा आर्कोशिया और जेड्रोसिया तक थी।

उत्तरी–पश्चिमी सीमा प्रान्त में अशोक के चतुर्दश शिलालेखों की दो अवलि पाकिस्तान के शाहबाजगढ़ी (पेशेवर) और मानशेहरा (हजारा) में मिली है। ये दोनों शिलालेख, ब्राह्मी लिपि के स्थान, खरोष्ठी में लिखे हैं। पाँचवें शिलालेख में पेशावर के पड़ोसी भाग गांधार का उल्लेख भी अशोक के साम्राज्य क्रम में हुआ है। राजतरंगिणी में अशोक को कश्मीर का राजा कहा गया है जिसने वहाँ श्रीनगर की स्थापना की थी और कई चैत्य, स्तूप और विहार बनवाये थे। उसने अशोकेश्वर नामक मन्दिर और पत्थर का दुर्ग भी बनवाया था। ह्वेनसांग ने अशोक द्वारा बनवाये गए काश्मीर में अनेक स्तूपों को देखा था। ये सभी अशोक का काश्मीर पर अधिकार बताते हैं। इस प्रकार देखा जाय तो अशोक का साम्राज्य पूरब में बंगाल से लेकर पश्चिम में अफगानिस्तान और बलूचिस्तान तक तथा उत्तर में हिन्दूकश और हिमालय से लेकर दक्षिण में मैसूर के दक्षिणी भाग चित्तलदुर्ग तक फैला था। पूरब में इसकी सीमा के बाहर कामरूप पश्चिम में यवन नरेश अन्तियोक और उसके पड़ोसी और उत्तर में हिमालय सीमा बनाता था। दक्षिण में चोल, पाण्ड्य, सत्यपुत, केरल और ताम्रपर्णी इसके राज्य के बाहर थे। इसको उसने 'महलअक हि विजिते' कहा है तथा इस क्षेत्र को जम्बूद्वीप एवं 'सब पठवियं (सम्पूर्ण पृथ्वी) (ल. शि. के. निट्कूर) कहा है।

5.5 प्रथम गिरनार शिलालेख का परिचय

गिरनार गुजरात में जूनागढ़ के निकट स्थित पहाड़ियाँ हैं। गिरनार की पहाड़ियों से पश्चिम और पूर्व दिशा में भादस, रोहजा, शतरूंजी और घेलो नदियाँ बहतीं हैं। इन पहाड़ियों पर मुख्यतः भील और डुबला लोगों का निवास है। इन पहाड़ियों पर मौर्य सम्राट अशोक का चतुर्दश शिलालेख अंकित है। पहाड़ियों की दूसरी ओर शक क्षत्रप रुद्रदामन का भी अभिलेख (150ई.) है। इस अभिलेख में मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के

आदेश से वहाँ पर सुदर्शन झील के निर्माण का उल्लेख है। रुद्रदामन के जूनागढ़ लेख से ज्ञात होता है कि, सम्राट अशोक के समय तुशाष्प नामक अधीनस्थ यवन राज्यपाल के रूप में सौराष्ट्र पर शासन करता था। गिरनार की एक पहाड़ी की तलहटी में अशोक के शिलालेख (तीसरी शताब्दी ई.पू.) से युक्त एक चट्टान है। मौर्य शासक चंद्रगुप्त (चौथी शताब्दी ई.पू. का उत्तरार्ध) द्वारा सुदर्शन नामक झील बनाए जाने का उल्लेख भी इसी शिलालेख में मिलता है। इन दो महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रमाणों के आस–पास की पहाड़ियों पर सोलंकी वंश (961–1242) के राजाओं द्वारा बनवाए गए कई जैन मंदिर भी स्थित हैं।

5.5 गिरनाथ का उत्कीर्ण लघु स्तम्भलेख

1. इयं धमलिपी देवानंपियेन
2. प्रियदसिना राञा लेखापिता इध न किं
3. चि जीवं आरभित्पा प्रजूहितव्यं
4. न च समाजो कतव्यो बहुकं हि दोसं
5. समाजम्हि पसति देवानंप्रियो प्रियदसि राजा
6. अस्ति पि तु एकचा समाजा साधुमता देवानं
7. प्रियस प्रियदसिनो राञो अनुदिवसं ब
8. हूनि प्राणसतसहस्त्रानि आरभिसु सूपाथाय
9. स अज यदा अयं धमलिपी लिखिता ती व प्रा
10. णा आरभरे सूपाथाय द्वो मोरा एको मगो सो पि
11. मगो न ध्रुवो एते पि प्राणा पछा न आरभिसरे

संस्कृत छाया–

1. इयं धर्मलिपिः देवानांप्रियेण
2. प्रियदर्शिना राज्ञा लेखिता। इह न क
3. श्चित् जीवः आलभ्य प्रहोतव्यः
4. न च समाजः कर्तव्यः। बहुकं हि दोषं
5. समाजे पश्यति देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा
6. सन्ति अपि तु एके समाजाः साधुमताः देवानां
7. प्रियस्य प्रियदर्शिनः राज्ञः। पुरा महानसे
8. देवानांप्रियस्य प्रियदर्शिनः राज्ञो अनुदिवसं ब–
9. हूनि प्राणशतसस्त्राणि आलभ्यन्त सूपार्थाय।
10. तत् अद्य यदा इयं धर्मलिपिः लिखिता, त्रयः एव प्रा–
11. णाः आलभ्यन्ते सूपार्थाय–द्वौ मयूरौ, एकः मृगः सोऽपि
12. मृगः न ध्रुवः। एते अपि त्रयः प्राणाः पश्चात् न आलप्स्यन्ते।

अनुवाद

1–2. यह धम्म लिपि देवानांप्रिय प्रियदर्शी राजा (अशोक) द्वारा लिखवाई गई है। यह कोई भी

3. जीव बलि के लिए नहीं मारा जाना चाहिए।

4. समाज का आयोजन नहीं करना चाहिए। बहुत से दोष

5. समाज में देवानांप्रिय प्रियदर्शी राजा देखता है।

6–7. फिर भी कुछेक समाजों को देवानांप्रिय प्रियदर्शी राजा उचित मानता है। पहले भोजनालय में

8. देवानांप्रिय प्रियदर्शी के प्रत्येक दिन सहस्रों जानवर (प्राणी) सूप के लिए मारे जाते थे।

10–11. पर आज से जब यह धर्मलिपि लिखी गई है (तब से) तीन ही प्राणी दो मोर और एक मृग व्यंजन के लिए मारे जाते हैं।

12. इनमें से मृग का मारना भी निश्चित नहीं। (कुछ समय) पश्चात् ये तीन प्राणी भी नहीं मारे जाएंगे।

बोध प्रश्न–1

1. निम्नलिखित प्रश्नों के ठीक उत्तरों पर सही (√) का चिन्ह लगाइये।

I. गिरनार शिलालेख कहाँ पर स्थित है। (जूनागढ़/मध्यप्रदेश)

II. प्रियदर्शी शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है। (अशोक/अकबर)

III. पशुओं को मारने का निषेध किसने किया है। (अशोक/अकबर)

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

I. गिरनार शिलालेख में चन्द्रगुप्त मौर्य ने.....निर्माण का आदेश दिया है। (सुदर्शन झील/राजरतन झील)

II. अशोक के 14 अभिलेख .....प्राप्त होते हैं। (गिरनार/जूनागढ़)

III. मृग शब्द का अर्थ..... है। (पशु/हिरण)

बोध प्रश्न–2

1. प्रथम गिरनार अभिलेख का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. अशोक के गिरनार शिलालेख पर उत्कीर्ण लेख को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न 1

अशोक के गिरनार शिलालेख को स्पष्ट कीजिए।

5.6 सारांश

अशोक के प्रथम गिरनार शिलालेख में यज्ञ में पशुबलि का निषेध किया गया है। वैदिक बलि व्यवस्था का यह अभिलेख स्पष्ट विरोध व्यक्त करता है। अनैतिक तथा हिंसापरक समाजों पर प्रतिबंध लगाया गया है। अशोक ने अपने रसोईघर में तथा प्रजा में मांस पकाने की कटौती की आज्ञा दी है। भविष्य में भोजन के लिए कोई भी जीवन ना मारने का संकल्प लिया गया हैं। बारह पंक्तियों का यह शिलालेख प्राकृत भाषा तथा ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण किया गया है। इस इकाई में अशोक का जीवनवृत्त, अशोक के अभिलेखों का विभाजन एवं उनकी विषयवस्तु, प्रथम गिरनार शिलालेख एवं गिरनाथ का उत्कीर्ण लघु स्तम्भलेख को ज्ञात किया गया।

5.7 शब्दावली

धम्मलिपि– कलिंग युद्ध के भीषण हत्याकांड ने अशोक को उद्वेलित कर दिया। परिणाम स्वरूप अशोक ने हिंसा का पूर्णतया परित्याग कर धर्ममार्ग को अपना लिया। इसी कारण अशोक के अधिकांश अभिलेखों में धम्म सम्बन्धी व्याख्या प्रमुख है। धम्म संस्कृत के धर्म शब्द का प्राकृत रूप है। धम्मलिपि अथवा धर्मलिपि से तात्पर्य ऐसी राजाज्ञा से है जो प्रजाजनों का नैतिक व धार्मिक दृष्टि से उद्‌बोधन करती है। यह धम्मलिपि प्रजाजनों को कर्तव्य–अकर्तव्य का बोध कराने के उद्देश्य से लिखवाई जाती थी। यथा प्रथम शिला अभिलेख में पशुहिंसा का निषेध किया है। अपि च सभी धार्मिक संप्रदायों में परस्पर सहनशीलता, संयम तथा भावशुद्धि रखने का उपदेश, धर्माचरण द्वारा इहलोक और परलोक का कल्याण, धर्मदान, धर्ममित्रता, धर्मसम्बन्ध की श्रेष्ठता पर बल इत्यादि विषयों का उल्लेख अशोक ने धम्मलिपि में किया है।

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- अभिलेखमंजूषा, रणजीत सिंह सैनी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन दिल्ली–2000
- उत्कीर्णलेखपंचकम्, झा बन्धु, वाराणसी, 1968
- उत्कीर्णलेखस्तबकम्, जियालाल कम्बोज, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली
- भारतीय अभिलेख, एस.एस.राणा, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 1978

- भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशंकर, हीराचन्द ओझा, अजमेर, 1918
- प्राचीन भारतीय लिपिशास्त्र और अभिलेखिकी, नारायण, अवध किशोर एवं ठाकुरप्रसाद वर्मा, वाराणसी 1970
- भारतीय पुरालिपि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, राजबली पाण्डेय, 1978
- भारतीय पुरालिपि शास्त्र, ब्यूलर जार्ज, (हिन्दी अनु.) मंगलनाथ सिंह, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली 1966
- अक्षरकथा, मुले गुणाकर, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, दिल्ली 2003
- लेखनकथा का इतिहास (खण्ड 1–2), ईश्वरचन्द्र राही, हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उ.प्र. 1983
- भारतीय पुरालिपि विद्या, डी.सी सरकार, (हिन्दी अनु.) कृष्णदत्त वाजपेयी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 1996
- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन, शिवस्वरूप सहाय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
- Selected Inscriptions (Vol.1) D.C.Sarkar, Calcutta, 1965
- Indian Chronlogy (Solar, Lunar and Planetary), Pillai, Swami Kannu & K.S. Ramchadran Asian Education Service 2003
- Text Book of Indian Epigraphy, K. Satymurty, Lower Price Publication, Delhi 1992

5.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. (i) जूनागढ (ii) अशोक (iii) अशोक
2. (i) सुदर्शन झील (ii) गिरनार (iii) पशु

बोध प्रश्न–2

1. गिरनार गुजरात में जूनागढ़ के निकट स्थित पहाड़ियाँ हैं। गिरनार की पहाड़ियों से पश्चिम और पूर्व दिशा में भादस, रोहजा, शतरूंजी और घेलो नदियां बहतीं हैं। इन पहाड़ियों पर मुख्यतः भील और डुबला लोगों का निवास है। इन पहाड़ियों पर मौर्य सम्राट अशोक का चतुर्दश शिलालेख अकिंत है। पहाड़ियों की दूसरी ओर शक क्षत्रप रुद्रदामन का भी अभिलेख (150ई.) है। इस अभिलेख में मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के आदेश से वहाँ पर सुदर्शन झील के निर्माण का उल्लेख है। रुद्रदामन के जूनागढ़ लेख से ज्ञात होता है कि, सम्राट अशोक के समय तुशाष्प नामक अधीनस्थ यवन राज्यपाल के रूप में सौराष्ट्र पर शासन करता था। गिरनार की एक पहाड़ी की तलहटी में अशोक के शिलालेख (तीसरी शताब्दी ई. पू.) से युक्त एक चट्टान है। मौर्य शासक चंद्रगुप्त (चौथी शताब्दी ई.पू. का उत्तरार्ध) द्वारा सुदर्शन नामक झील बनाए जाने का उल्लेख भी इसी शिलालेख में मिलता है। इन दो महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रमाणों के आस–पास की पहाड़ियों पर सोलंकी वंश (961–1242) के राजाओं द्वारा बनवाए गए कई जैन मंदिर भी स्थित हैं।

2. गिरनार का उत्कीर्ण शिलालेख–

1. इयं धमलिपी देवानंपियेन
2. प्रियदसिना राञा लेखापिता इध न किं
3. चि जीवं आरभित्पा प्रजूहितव्यं
4. न च समाजो कतव्यो बहुकं हि दोसं
5. समाजम्हि पसति देवानंप्रियो प्रियदसि राजा
6. अस्ति पि तु एकचा समाजा साधुमता देवानं
7. प्रियस प्रियदसिनो राञो अनुदिवसं ब
8. हूनि प्राणसतसहस्त्रानि आरभिसु सूपाथाय
9. स अज यदा अयं धमलिपी लिखिता ती व प्रा
10. णा आरभरे सूपाथाय द्वो मोरा एको मगो सो पि
11. मगो न ध्रुवो एते पि प्राणा पछा न आरभिसरे

संस्कृत छाया–

1–2.इयं धर्मलिपिः देवानांप्रियेण

3. प्रियदर्शिना राज्ञा लेखिता। इह न क

4. श्चित् जीवः आलभ्य प्रहोतव्यः

5. न च समाजः कर्तव्यः। बहुकं हि दोषं

6. समाजे पश्यति देवानांप्रियः प्रियदर्शी राजा

7. सन्ति अपि तु एके समाजाः साधुमताः देवानां

8. प्रियस्य प्रियदर्शिनः राज्ञः। पुरा महानसे

9. देवानांप्रियस्य प्रियदर्शिनः राज्ञो अनुदिवसं ब–

10. हूनि प्राणशतसस्त्राणि आलभ्यन्त सूपार्थाय।

11. तत् अद्य यदा इयं धर्मलिपिः लिखिता, त्रयः एव प्रा–

12. णाः आलभ्यन्ते सूपार्थाय–द्वौ मयूरौ, एकः मृगः सोऽपि

13. मृगः न ध्रुवः। एते अपि त्रयः प्राणाः पश्चात् न आलप्स्यन्ते।

अनुवाद–

1–2. यह धम्म लिपि देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा (अशोक) द्वारा लिखवाई गई है। यह कोई भी

3. जीव बलि के लिए नहीं मारा जाना चाहिए।
4. समाज का आयोजन नहीं करना चाहिए। बहुत से दोष
5. समाज में देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा देखता है।

6. फिर भी कुछेक समाजों को देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा उचित मानता है। पहले भोजनालय में

7. देवानंप्रिय प्रियदर्शी के प्रत्येक दिन सहस्रों जानवर (प्राणी) सूप के लिए मारे जाते थे।

8. पर आज से जब यह धर्मलिपि लिखी गई है (तब से) तीन ही प्राणी दो मोर और एक मृग व्यंजन के लिए मारे जाते हैं।

9. इनमें से मृग का मारना भी निश्चित नहीं। (कुछ समय) पश्चात् ये तीन प्राणी भी नहीं मारे जाएंगे।

अभ्यास प्रश्न–

इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY